an>

Title: Need to release a commemorative postal stamp on the occasion of birth centenary of Saint Tulsidas.

श्री गजेन्द्र सिंह शेखावत (जोधपुर) : माननीय सभापति महोदय, हमारा देश अध्यात्म प्रधान देश है और इस देश में अनेक संतों, विचारकों, मनीषियों, दार्शनिकों ने जो विचार और दर्शन प्रतिपादित किए हैं, उनसे हमारी संस्कृति एक मिली-जुली संस्कृति, एक गंगा-जमुनी संस्कृति के रूप में आगे बढ़ी है।

महोदय, आर्यभट्ट से लेकर विश्वामित्र तक, आचार्य तुलसी से लेकर मीरा, रहीम, रैदास, कबीर अनेक दार्शनिक हुए हैं। अगर मैं पुराने समय की चर्चा नहीं करूं, महात्मा गांधी से लेकर गुरू गोलवलकर तक अनेक ऐसे दार्शनिक हुए हैं, जिनके दर्शन का प्रभाव इस देश की संस्कृति पर दिखाई देता है। अनेक युग-सापेक्ष, काल-सापेक्ष और काल-निरपेक्ष, अनेक तरह के दर्शन और विचार हमारी संस्कृति को प्रभावित करते हैं।

महोदय, वर्तमान वर्ष एक ऐसे महान मनीषी का जन्म-शताब्दी वर्ष है, एक ऐसे महान दार्शनिक का जन्म-शताब्दी वर्ष है, जिसने अपनी विशिष्ट प्रतिभा से, अपनी काल-सापेक्ष दृष्टि से, अपनी सृजनात्मक चेतना से, अपनी पारदर्शी मनीषा से इस पूरे देश को एक दर्शन दिया था कि जो दर्शन और सिद्धान्त सन्यासियों और साधुओं के लिए बनाए गए थे, उन दर्शनों और सिद्धान्तों को आम व्यक्तियों के लिए अणुव्रत के रूप में प्रतिस्थापित किया। ऐसे आचार्य तुलसी, ऐसे महान मनिषी का यह वर्ष जन्म शताब्दी वर्ष है। वह ऐसे मनिषी थे, जिनसे, इस देश में जितनी भी राजनैतिक विचारधाराएं हैं और उनका नेतृत्व करने वाले अग्रणी पुरुष हैं, सबको न केवल मार्गदर्शन मिला है, बल्कि विचार भी मिला है। मैं आपके माध्यम से सदन का ध्यान आकर्षित करते हुए सरकार से आग्रह करना चाहता हूं कि उस महान विचारक को, उसके विचार और दर्शन के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करते हुए इस वर्ष को एक विशेष वर्ष के रूप में घोषित किया जाना चाहिए। साथ ही साथ मैं यह भी कहना चाहता हूं कि उनकी जन्मशती वर्ष के उपलक्ष में एक डाक टिकट जल्द से जल्द जारी किया जाना चाहिए तथा एक कल्याणकारी योजना देश भर में उनके नाम से अवश्य आरम्भ की जानी चाहिए।

माननीय सभापति :

श्री अर्जुनराम मेघवाल श्री गजेन्द्र सिंह शेखावत द्वारा उठाए गए विषय से अपने आपको सम्बद्ध करते हैं।